कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) ______

(In Words) ______

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ______

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी ☐

विषय चित्रकला

परीक्षा का दिन शनिवार

दिनांक 30-3-19

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर............ संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।165/2019

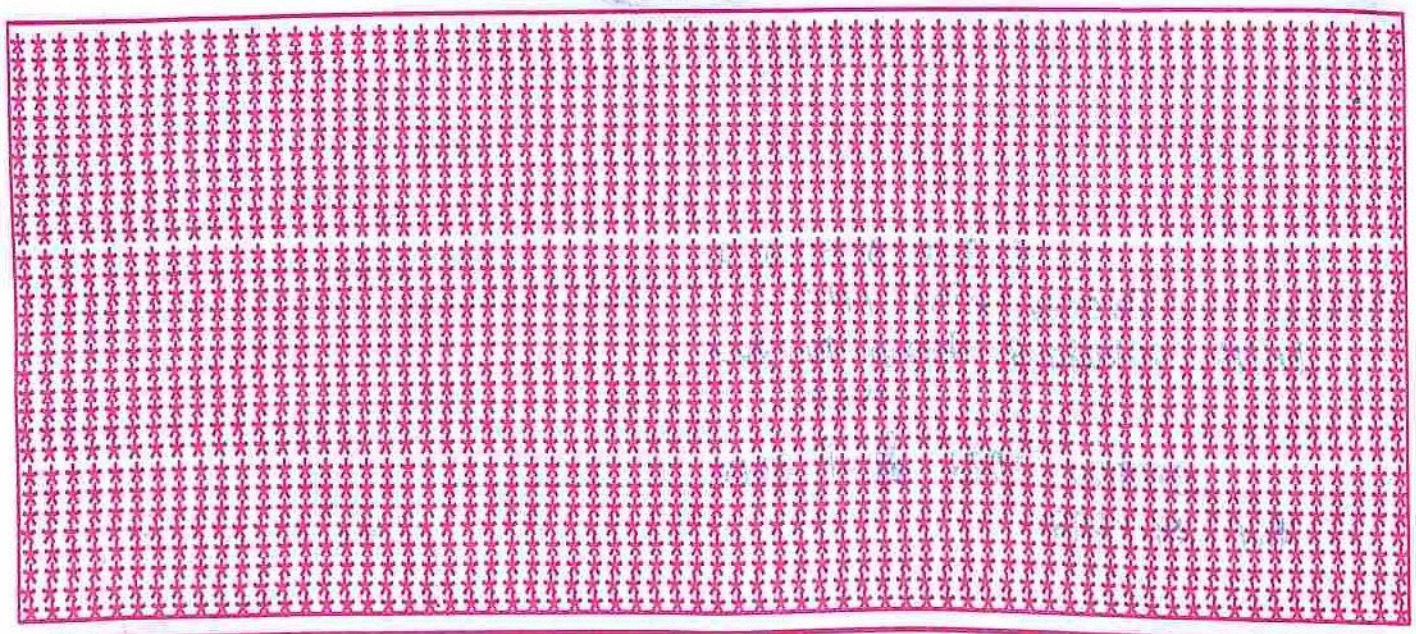

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	1	'सलीम का जन्म' चित्र केसू द्वारा बनाया गया था जो अकबरकालीन चित्र है।
	2	मीर सैयद अली का प्रमुख शीर्षक - लैला-मंजनू है।
	3	कम्पनी शैली।
	4	'रावण व जटायु' नामक चित्र 'राजा रवि वर्मा' द्वारा बनाया गया है।
	5	'दिल्ली शिल्पी चक्र समूह' की स्थापना 'कला जीवन को प्रदीप्त करती है' के वाक्य से बी.सी. सान्याल व धनराज भगत ने 25 मार्च 1949 को की।
	6	'फूल बेचने वाली' चित्र अमृता शेरगिल का है।
	7	ए. रामचन्द्रन के 'आकर्षक-चित्र' ययाति, उर्वशी हैं।
	8	पनघट, साधु, हाट बाजार चित्र के. के. हेब्बार ने की है।
	9	भूर सिंह शेखावत ने अधिक अनेक चित्रो का निर्माण किया है। उन्होंने 'गांधी जी' पर भीति-चित्रो पर चित्र बनाये हैं। बुनकर, बंजारे, श्रमिक, कृष्णा-राधा, मीरा(?)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		गुब्बारेवाला प्रमुख चित्र हैं। आरा फिरते, चक्की चलाते एक कसाल काटते प्रमुख चित्र है।
	10	मोर का चितेरा (पी. एन. चोयल) को कहा जाता है देवकीनन्दन शर्मा
	11	'मिल-कॉल' मूर्तिशिल्प 'रामकिंकर बैज' ने बनाया था। आधुनिक मूर्तिकला का जनक माना जाता है।
	12	शंखो चौधरी का विख्यात शिल्प है- (पिकार, पिकॉक, हैड ऑफ गर्ल, शीर्षकहीन हैड, बर्ड)
	13	i) विमलशाही मंदिर देलवाड़ा के जैन मंदिरों मे स्थित हैं। यह एक उत्कृष्ट मंदिर हैं। सिरोही मे स्थित हैं। ii) जिसका निर्माण विमलशाह ने करवाया था।
	14	कलकत्ता कला समूह की स्थापना 1953 ई. प्रदोष दास गुप्ता व निरोज मजूमदार द्वारा की गई थी। इस संस्था चित्रकला के माध्यम से पुरानी धाराओं व परम्पराओं को उखाड़ फेंका था।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

15 पेग ⇒ पेग का पुरा प्रोगेरिसव आर्टिस्ट ग्रुप है। इसकी स्थापना ~~ई~~ ~~क~~ 1947 मे हुई थी।

दो कलाकार ⇒ आरा, सूजा, राजा, बाकरे, गांडे हुसैन।

16 राजस्थान के पद्मश्री सम्मान से सम्मानित चित्रकार है -

~~1) देवी गोपिचन्द मिश्रा।~~

i) रामगोपाल विजयवर्गीय ii) बी.सी. गुई

~~iii) अर्जुनलाल प्रजापति~~

iii) देवकीनन्दन शर्मा iv) पी.एन. चोयल

v) कृपाल सिंह शेखावत

17 देवी प्रसाद राय चौधरी के प्रमुख मूर्तिशिल्प है -

i) शहीद स्मारक ii) श्रम की विजय

i) शहीद स्मारक → शहीद स्मारक मूर्तिशिल्प पटना (~~बि~~ सचिवालय) के बाहर की गई थी। 1956 में। ~~जो~~ स्वतंत्रता आंदोलन को प्रेरित करता है। सात युवको को दिखाया गया है।

ii) श्रमी की विजय → श्रम की विजय मूर्तिशिल्प चेन्नई मे है। जिसमे चार युवक श्रम करते हुए दिखाए गये हैं। एक पत्थर को धकेल रहे हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

18 द्वारका प्रसाद शर्मा → द्वारका प्रसाद शर्मा का जन्म 1922 मे स्वाईमाधोपुर के बालेर जिले मे हुआ।

19 राम जैसवाल के प्रमुख चित्र है ⇒ i) बंदी ii) वियोग

20 स्व गोपीचन्द मिश्रा के मूर्तिशिल्प है-

i) यह बोझ नही मेरा भाई है।

ii) शिव ताण्डव।

iii) माँ और शिशु।

21 दक्षिणी कला शैली → बहमनी सल्तनत मे पनपी कला शैली दक्षिणी कला शैली कहलाती है। जो तुंगभद्रा व नर्मदा ताप्ती, नदियो के पास दक्षिणी राज्य मे स्थित है। जिनमे विजयनगर साम्राज्य महत्वपूर्ण है। जिसकी स्थापना 1336 ई. मे हरिहर व बुक्का प्रथम ने कि। अलाउद्दीन बहमन शाह के नाम पर बहमनी सल्तनत का नाम पड़ा। जिसकी स्थापना 1347 ई. मे की। बहमनी दक्षिणी शैली के चार प्रमुख केन्द्र थे

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

i) अहमदनगर ii) विजयनगर iii) गोलकुण्डा iv) बीजापुर

बहमनी सल्तनत पांच भागों मे विभक्त हो गया -
i) अहमदनगर (ii) बिजापुर (iii) गोलकुण्डा
iv) बीदर (v) बीरार

अहमदनगर के सुल्तान हुसैन निजाम शाही थे। इनके पुत्र मुर्तजा ने तारिफ-ए-हुसैन शाही को चित्रित करवाया था। जिसमे 12 चित्र है।
बिजापुर चित्र शैली मे 'चांद बीबी पोलो खेलते हुए' नामक चित्र बनाए। इनकी बीबी चांद बीबी एक प्रसिद्ध चित्रकर्त्री थी।
गोलकुण्डा की प्रसिद्ध चित्र 'मैना और स्त्री है' जो डबलिन के चेस्टर बेरी मे स्थित हैं। नारी चित्र विख्यात हैं। गोलकुण्डा हीरो के लिए प्रसिद्ध हैं।
बीदर व बीरार का सामन्य महत्व जिन पर इन तीन शैलियो का अधिकार हैं।

22 कम्पनी शैली ⇒ 1858 ई. मे कम्पनी की शासन व्यवस्था को सीधे इंग्लैण्ड सरकार को सौंप दी गई हैं। यूरोपिय कला तत्वो व भारतीय सांस्कृति मूल तत्व ब्रिटिश कलाकार आदि ने कम्पनी शैली को मौलिक तत्व प्रदान किया था।
पटना शैली ⇒ कम्पनी शैली को पटना शैली के नाम से जाना जाता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

क्योंकि पटना मे इसका केन्द्र स्थापित हो गया था।

प्रमुख केन्द्र → कम्पनी शैली मे चित्रकर्म इन प्रमुख कला केन्द्रो पर होता था -
i) अवध
ii) मुर्शिदाबाद
iii) अवध (1850)
iv) कलकत्ता (1854)
v) लाहौर (1857)
vi) मुम्बई (1857)
vii) पटना

चित्रकार → कम्पनी शैली को भारतीय व ब्रिटिश कलाकारो ने संरक्षण प्रदान किया था। इनमे प्रमुख
i) विलियम होजेज
ii) विलियम डेनियल
iii) थामस डेनियल
iv) चार्ल्स डी. ओली

भारतीय चित्रकार → भारतीय चित्रकारो मे प्रमुख शिवदास, भवानी दास फकीरचन्द, प्रमुख थे। जो चित्र बनाते थे।

19वी शताब्दी → कम्पनी शैली पर मुगल प्रभाव आ गया था।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

23 मृणालिनी मुखर्जी ⇒ मृणालिनी मुखर्जी प्रकृति से सम्बन्धित चित्रकार थे। इनका जन्म मुम्बई मे हुआ था। इन्होने आधुनिक मूर्तिकला मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इन्होने अनेक मूर्तिशिल्पो का विभिन्न माध्यम मे ~~प्रक~~ निर्माण किया।

रेशो का प्रयोग ⇒ मुखर्जी ने अपने मूर्तिशिल्पो मे प्राकृतिक रेशो का प्रयोग किया था। उन्होने प्रकृति से प्राप्त रेशो मे गाँठ डालकर मूर्तिशिल्पो का निर्माण किया था। वन राजा प्रमुख मूर्तिशिल्प हैं। तथा कील पेच, काष्ठ, कंकरीट, सीमेंट के मूर्तिशिल्पो का भी निर्माण किया।

i) पाम स्केप ⇒ पाम स्केप इनका प्रमुख मूर्तिशिल्प हैं। जो एक पेड़ के तने की तरह दिखाई देता हैं। एक खुरदा तना दर्शाया गया हैं। तथा रेखांकन गतिशील हैं।

ii) वन राजा ⇒ वन राजा भी एक प्रमुख मूर्तिशिल्प हैं। जो एक मानव की तरह दिखाई देता हैं। शासक के रूप मे निरूपित किया गया हैं। रेशो की गाँठे डालकर बनाया गया हैं। तथा हाथ निचे दर्शाये गये हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

25 चौमुखा मंदिर ⇒ चौमुखा मंदिर रणकपुर (पाली) मे स्थित है। जो एक जैन धर्मावलम्बियो प्रमुख मंदिर है। यह आदिनाथ को समर्पित है। चौमुखा मंदिर के कारण ही रणकपुर प्रसिद्ध है। इसका निर्माण धन्नाशाह व रत्नशाह द्वारा 1439ई. मे बनवाया गया है। चौमुखा मंदिर मे उत्कृष्ट नक्काशी है। तोरणद्वार, गर्भगृह, स्तम्भ, जालिया, शिवलिंग आदि इसकी प्रमुख विशेषता है। चौमुखा मंदिर को चतुर्मुख आदिदास के मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। रणकपुर के जैन मंदिरो को त्रैलोक्य द्वीप के नाम से भी जाना जाता है। यह भगवान आदिनाथ व ऋषभदेव को ~~समर्पि~~ ~~समर्पित~~ समर्पित है। जो जैन के प्रथम तीर्थंकार है। धन्नाशाह व रत्नशाह द्वारा इस मंदिर का निर्माण सोमसुन्दर सुरिजी के निर्देशन मे करवाया गया था। सोमसुन्दर सुरीजी एक प्रमुख शिल्पकार थे। राणा कुम्भा ने भी अनेक मंदिरो का निर्माण करवाया। इसके नाम पर है। यहा पर अनेक मंदिर भी बने हुए है। जो सभी जैन मंदिर है। स्तम्भो का अजायबघर के नाम से भी जाना जाता है। 1444 स्तम्भ है। स्तंभो पर उत्कृष्ट अलंकरण किया गया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

25 उषा रानी हूजा → उषा रानी हूजा का जन्म 1923 ई. मे दिल्ली मे हुआ। यह राजस्थानी की एक प्रमुख महिला मूर्तिकार है। इन्होने विभिन्न माध्यमो मे काम करते हुए राजस्थान की समकालीन कला मे महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन्होने सीमेंट, कंक्रीट, काष्ट, शिल्प, फाइबर का निर्माण करते हुए अनेक मूर्तिशिल्पो का निर्माण किया था। इन्हे अनेक पुरस्कार व सम्मान भी प्राप्त हुए। राष्ट्रीय ललित कला अकादमी द्वारा 'कलाविद्' का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। इन्होने राजस्थान की मूर्तिकला मे अनेक मूर्तिशिल्पो का निर्माण किया। जिनमे शीर्षकहिन मूर्तिशिल्प प्रमुख है। टॉयलेट व पक्षी इनके प्रसिद्ध मूर्तिशिल्प है। जिनमे पक्षी को तीखी नोक से दर्शाया गया है। तथा कांस्य माध्यम से बनाया गया था तथा टॉयलेट 36×30×67.7 का है। जो एक महिला की आकृति है। जिसमे हाथ ऊपर दिखाये गये है। वक्ष-स्थल उभरे हुए है। उषा रानी हूजा एक प्रसिद्ध मूर्तिकार थी उन्होने ओरिएन्टल स्कूल ऑफ आर्ट मे शिक्षा प्राप्त की थी। उषा रानी हूजा ने प्रारम्भिक शिक्षा महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट से प्राप्त की थी। इन्होने जाली दुलकटी, सीमेंट, कंक्रीट का माध्यम अपनाया। राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा 'कलाविद्' पुरस्कृत किया।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

26 मुगल कला → मुगल कला एक उत्कृष्ट कला है। जिनमे अनेक राजाओ ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। जिनमे जहांगीर के काल को स्वर्ण युग कहा जाता है। प्रमुख शासक i) बाबर ii) हुमायू iii) अकबर iii) जहांगीर iv) शाहजहा v) औरंगजेब है।

औरंगजेब के समय मे मुगल कला का सूर्य ऐसा अस्त हुआ कि कभी उदय ही नही हुआ।

प्रमुख विषय → मुगल कला मे अनेक विषयो पर आधारित चित्र बनाए जो निम्न प्रकार से है।

(1) अकबर कालीन विषय → अकबर के काल मे अनेक विषयो का निर्माण हुआ था

i) भारतीय कथाओ → भारतीय आधारित विषयो मे रज्मनामा, योग वशिष्ठ, नल दमयन्ती, रसिकप्रिया आदि है।

ii) अभारतीय कथाओ के विषय → अभारतीय कथाओ मे हम्जनामा, का चित्रण प्रमुख रूप से किया गया है

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

iii) व्यक्ति चित्र ⇒ अकबर के समय मे व्यक्ति चित्रो के बहुलता थी। जिनमे राजदरबारियो, राजाओ, अधिकारियो के चित्र बनाये गये थे।

iv) साहित्य ⇒ साहित्य आधारित चित्र भी बनाये गये थे।

(11) जहांगीर कालीन चित्रो के विषय ⇒ जहांगीर कालीन चित्रो मे प्रमुख रूप से है।

(i) व्यक्ति चित्र ⇒ व्यक्ति चित्र प्रमुख रूप से बने हैं। चित्रशालाओ पर राजकीय नियंत्रण था।

(ii) पशु पक्षी - प्रकृति ⇒ पशु - पक्षी व प्रकृति पर अनेक चित्र बनाये गये है। उस्ताद मंसूर ~~व~~ प्रमुख ~~पक्षीचित्र~~ पक्षी चित्रकार थे। 'बाज' का चित्र बनाया था।

(III) शाहजहाँ कालीन ⇒ शाहजहाँ के काल मे भी प्रमुख विषय थे।

i) वैभव सम्बन्धी ⇒ वैभव सम्बन्धी प्रमुख चित्र बनाये गये थे।

(ii) राजदरबारियो व व्यक्तिचित्र ⇒ राजदरबारियो व व्यक्ति चित्रो के आधार पर भी चित्र बनाये गये हैं।

BSER-165/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

27

महाबलिपुरम → महाबलिपुरम मध्यकालीन मूर्तिकला का एक उत्कृष्ट व महत्वपूर्ण केन्द्र हैं। जो मद्रास से 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं। महेन्द्र वर्मन प्रथम व नरसिंहवर्मन प्रथम ने माहबलिपुरम में कांची पल्लवकालीन में वास्तुकला व मूर्तिकला में योगदान दिया था।

प्रमुख मंदिर शैली → महाबलिपुरम में तीन प्रकार के मंदिर बनाये जाते थे। जो निम्न प्रकार से हैं।

i) सप्त रथ मण्डप → सप्त रथ मण्डप में समुद्र के आस-पास पर्वत को तराशकर मंदिर बनाये जाते थे।

(ii) शैल मण्डप → शैल मण्डप में समुद्र के किनारे पर मंदिर बनाये जाते थे।

प्रमुख मूर्तिशिल्प → महाबलिपुरम में अनेक मूर्तिशिल्पों का निर्माण किया गया था जिनमें सप्त रथ, गंगावतरण, वराह मंदिर व दुर्गा मंदिर प्रमुख हैं।

(1) सप्त रथ → सात मंदिरों के समूह को 'सप्तसमूह' के नाम से जाना जाता हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

'मामल्ल शैली' में निर्मित मंदिर रथ के नाम से जाने जाते हैं। एक पर्वत को तराशकर या काटकर बनाये गये मंदिर 'रथ' के नाम से जाने जाते हैं।
सप्त मंदिरों में अर्जुन मंदिर, भीम, द्रौपदी, धर्मराज, नकुल - सहदेव, गणेश रथ प्रमुख मंदिर हैं।
अर्जुन, धर्मराज, गणेश रथ सामान्य स्तर के मंदिर हैं।
पाण्डवों रथों का चित्रांकन उत्कृष्ट शैली का है। जो भारतीय इतिहास को प्रदर्शित करते हैं।

(ii) ~~वराह~~ दुर्गा मंदिर ⇒ वराह मंदिर में देवी दुर्गा की मूर्ति स्थापित है। जो 'महिषासुर' का वध करते दिखाया गया है।

(iv) वराह मंदिर ⇒ वराह मंदिर में अनेक देवी-देवताओं की मूर्तियों का अंकन है- गजलक्ष्मी, दुर्गा, शिव

(v) गंगावतरण शिल्प ⇒ महाबलिपुरम में गंगावतरण शिल्प एक महत्वपूर्ण है। 98 फुट लम्बा 33 फीट चौड़ा है। शिव की तपस्या रथ दिखाया गया है। 'भागीरथ की तपस्या' के नाम से भी जाना जाता है। चट्टान के बीच धारा

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

दर्शायी गई है। जो गंगा नदी का आभास करती है।

शैली ⇒ मंदिरों में भव्य या मांसल शैली प्रमुख है।

(28) 26 पहाड़ी शैली ⇒ हिमाचल व पंजाब की घाटियों के बीच स्थित पहाड़ी शैली के नाम से जाना जाता है। मूल पहाड़ी कलाकारों व राजस्थानी कलाकारों ने पहाड़ी शैली को जन्म दिया।

बसोहली के कृपालपाल, गुलेर के गोवर्धनसिंह (1760 ई.) कांगड़ा के संसार चन्द ने पहाड़ी शैली संरक्षण प्रदान किया था।

विशेषताए ⇒ पहाड़ी शैली को अनेक भागों में बांटा गया है। चम्बा, गुलेर, जम्मू, कांगड़ा, बसोहली शैली आदि है। जिनमे बसोहली व कांगड़ा का महत्वपूर्ण स्थान है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(i) पुरुष आकृतियाँ → पहाड़ी चित्र शैली मे पुरुष आकृतियो मे गोल पगड़ी, गले मे माला, जामा, ढीले सूथनदार वस्त्र, कमर पे पटका चित्रित किया गया हैं। पुरुष आकृतियो मे बसोहली व कांगड़ा मे भिन्नता पाई जाती हैं।

(ii) नारी आकृतियाँ → नारी आकृतियो का चित्रण विशेष प्रसिद्ध व सुन्दर रूप मे किया गया हैं। नारी को माधुर्य रूप मे अंकित किया गया हैं। तथा नासिका नथ युक्त, कपोल लालिमायुक्त है।

(iii) विषय → पहाड़ी शैली मे अनेक विषयो पर चित्र बनाये गये थे। वैष्णव धर्म का प्रमुख स्थान था। साहित्य आधिरत चित्र मे भी प्रमुख चित्रण किया गया था। जयदेव कृत 'गीतगोविन्द', केशव रसिकप्रिया, भानुदत्त कृत रसमंजरी, आदि काव्य पर चित्रण किया गया था।

(iv) रंग → बसोहली शैली मे प्रतीकात्मक रंगो का प्रयोग किया गया था।
कांगड़ा शैली मे नीले, हरे, लाल पीले, काले गहरे आदि रंगो का प्रयोग किया गया था।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(v) पशु-पक्षी चित्रण → कांगड़ा शैली मे मानव भावना के अनुकूल अंकित किया गया है। बसोहली मे पशुओ को मुरझे, पिचके पेट वाले, कमजोर पतले दुबले का चित्रण किया गया था।

(vi) प्रकृति चित्रण → प्रकृति चित्रण को विविध रंगो द्वारा उभारा गया था। पुष्पित वृक्ष, धरती से प्रस्त मैदान आदि है।

(vii) कांगड़ा का स्वर्ण युग → राजा संसारचन्द के समय कांगड़ा का स्वर्ण युग था।

(viii) हाशिये → हाशिये सीधे व सपाट रंग के बनाये जाते थे। लाल-पीले गहरे रंगो का प्रयोग किया जाता था।

(ix) बसोहली का स्वर्ण युग → बसोहली की स्थापना भोगपाल (1755) ने की कृपालपाल स्वर्ण युग था।

(x) पृष्ठभूमि → पृष्ठभूमि से वास्तुशिल्प, बेल बूटेदारो

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

29 मेवाड़ शैली → मेवाड़ शैली राजस्थानी शैली की एक प्रमुख शैली है। जिसमे उदयपुर, नाथद्वारा आदि उपशैलियां है।

⇒ मेवाड़ शैली से राजस्थानी शैली का जन्म माना जाता है।

⇒ ~~प्रमुख~~

⇒ मेवाड़ चित्रकला को प्रोत्साहन → मेवाड़ चित्रकला को अनेक राजाओ ने संरक्षण प्रदान किया था जिनमे राजसिंह व संग्राम सिंह प्रमुख थे।

(1) राजसिंह व गजसिंह द्वारा चित्रकला को प्रोत्साहन ⇒

कुम्भलगढ़, उदयपुर आदि मेवाड़ शैली के प्रमुख केन्द्र हैं। राजसिंह व गजसिंह के समय मेवाड़ शैली के लिए अच्छा समय था। अनेक साहित्य व काव्य आधारित चित्रो का चित्रांकन हुआ था।

(2) अजीतसिंह व अभयसिंह द्वारा संरक्षण ⇒ मेवाड़ शैली मे अजीतसिंह व अभय सिंह द्वारा भी संरक्षण दिया गया। भानुदत्त कृत रसमंजरी, केशव - रसिकप्रिया, जयदेव कृत गीत गोविन्द।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(III) रामसिंह द्वारा संरक्षण प्रदान करना ⇒ रामसिंह के समय प्रकृति का चित्रण बहुलता से हुआ था। तथा भित्ति चित्रों की भी बहुलता थी।

(IV) संग्राम सिंह द्वितीय ⇒ संग्राम सिंह द्वितीय का काल स्वर्ण युग था। शिकार के दृश्यों की बहुलता थी। साहित्य आधारित चित्रों पर अनेक चित्र बनाये गये थे। देवगढ़ की हवेली प्रमुख रूप से भित्ति चित्रों मे प्रसिद्ध है।

(V) भीमसिंह → भीमसिंह ने भी मेवाड़ शैली को संरक्षण प्रदान किया था। भीमसिंह ने भीत्ति - चित्रणों को महत्व प्रदान किया।

विशेषताऐं ⇒ मेवाड़ शैली की प्रमुख विशेषताऐं निम्न प्रकार से है।

(I) पुरुष आकृतियाँ → पुरुष आकृतियों मे मध्यम कद काठी, शिरस्त्रम्भा व मेवाड़ी पगड़ी प्रमुख थी। गले मे माला, मांसल पुष्ट प्रमुख थे।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(2) नारी आकृतियाँ → नारी आकृतियों में नासिका नथ युक्त, कपोलों पर बाल लटकते हुए थे। खुले बाल थे, मीनाकृति आँखें, यौवन पूर्ण नारी आदि प्रमुख विशेषता।

(3) विषय → भानुदत्त कृत 'रसमंजरी', जयदेव कृत गीत गोविन्द, केशव रसिकप्रिया प्रमुख साहित्य आधारित विषय थे।
सूर, तुलसी, केशव, सूरदास प्रमुख विषय थे।

(4) प्रकृति चित्रण → मेवाड़ शैली के चित्रों में प्रकृति चित्रण बहुलता से दिखाई देता है। प्रकृति का चित्रण मनोरम है।

(5) हाशिये → हाशिये चित्रों की सुन्दरता बढ़ाते थे। हाशिये गहरे नीले, पीले, आदि रंगों में बनाये गये थे।

(6) संयोजन → संयोजन वास्तुशिल्प एवं बेलबूटों से परिपूर्ण है।

(7) पशु-पक्षी → पशु-पक्षियों का चित्रण भी दिखाई देती है। मोर, कौआ, कोयल, चिड़िया का चित्रण बहुलता से है।

BSER-165/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

30 बंगाल शैली → बंगाल शैली का चित्रकला के कलाओं मे महत्वपूर्ण स्थान रहा है। बंगाल शैली प्रारम्भ मे ~~बंगाल~~ आंदोलन के रूप मे विकसित हुई थी। इसने भारतीय जनजीवन पर आधारित चित्र बनाये व अनेक कलाकारो को जागरूक कर महत्वपूर्ण कला शिक्षा प्रदान की। बंगाल शैली मे स्वतंत्रता मे महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वतंत्रता पर आधारित चित्रण होने लगा।

बंगाल शैली का जन्मदाता → अविन्द्रनाथ ठाकुर

बंगाल शैली → अविन्द्रनाथ ठाकुर की निजि शैली पर राजपूत, बुन्देली, कश्मीरी, अजन्ता आदि शैलियों का प्रभाव पड़ा इन सब के समन्वय से एक नवीन शैली का जन्म हुआ जो ठाकुर शैली, बंगाल शैली के नाम से जाना जाता है।

ई.बी हैवल 1884 मे मद्रास स्कूल के प्रधानाध्यापक नियुक्त हुए। उसी समय 1885 ई. मे कांग्रेस की स्थापना हुई और ~~बंगाल~~ जिसने जनजागृति मे अपनी महत्वपूर्ण

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

भूमिका निभाई थी। ई.बी हैवल ने भी अपना योगदान दिया था। ई.बी हैवल ने भारतीय शैली का महत्व बताते हुए कहा कि 'भारतीय दृष्टिकोण कभी भी पाश्चात्य दृष्टिकोण नहीं हो सकता है। भारतीय कलाकारों को पाश्चात्य शैली का त्याग देना चाहिए। अवनीन्द्रनाथ ठाकुर ई.बी हैवल के सम्पर्क में आये। इनकी शैली पर राजपूत, बुन्देला, शैलियों का प्रभाव था। इन सब शैलियों के समन्वय से एक शैली का जन्म हुआ जिसे ठाकुर शैली या बंगाल शैली का जन्म हुआ था।

अवनीन्द्रनाथ ठाकुर के अनेक शिष्य थे- नन्दलाल बसु, असित कुमार हल्दार, शैलेन्द्रनाथ डे ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस शैली का प्रारम्भ आन्दोलन के रूप में हुआ था। इसकी आलोचना भी हुई। लेकिन कला कलाकार कला-दृष्टा से बढ़ने लगे। अन्त में एक सफलता पाई।

विशेषताएं => बंगाल शैली की अनेक विशेषताएं हैं। जिनमें प्रमुख रूप से निम्न प्रकार से हैं।

1) शैली => बंगाल शैली की शैली सरल व स्पष्ट है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ii) भड़कीला तथा रंग का प्रयोग शांत रंग योजना का प्रयोग किया

(iii) जल रंग व वॉश पद्धति को अपनाया

(iv) फोटोनुमा स्वभाविकता का जोर हो गया।

(v) यूरोपिय शैली का यथार्थ रेखांकन चीनी शैली का सम्मिश्रण है।

(vi) रंग योजना → रंग योजना आकर्षित वॉश पद्धति व टेम्परा प्रयोग किया गया है।

(vii) यूरोपियो वादो, शैलि, रेखांकन का परित्याग = मे यूरोपियो शैलि, वादो का परित्याग दिया गया तथा भारतीयो शैलियो अपनाया गया था।

(viii) विषय वस्तु → कम्पनी बंगाल शैली मे विषयो पर चित्र बन

(ix) बंगाल शैली का जन्म बौद्धिक विचार द्वैम का प्रतिफल है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(x) बंगाल शैली पर अजन्ता, मुगल, राजस्थानी चित्रो का प्रभाव है।

(xi) बुद्ध सुजाता, बुद्ध केकणा, कृष्ण व साधु, राधा-कृष्ण, आदि पर विषय चित्रित बनाया गया थे।

(xii) उमरख्याम की श्रृंखला, विरही यक्ष, गणेश जननी, आदि प्रारम्भिक चित्र है।

(xiii) प्रणेता → नन्दलाल बसु ने इस शैली मे अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। असितकुमार हल्दार भी थे। शैलेन्द्र नाथ डे ने प्रमुख चित्र बनाए।

(xiv) देशकाल की अनुरूपता → बंगाल शैली, मे राजमहल, दुर्ग, भवन पर चित्र बनाए गये थे।

मूल्यांकन → बंगाल शैली एक प्रमुख शैली थी। जिसने सामान्य आंदोलन को राष्ट्रीय आंदोलन मे बदला। यह शैली कलाकारो को नवीन आशय प्रदान किया था।

प्रमुख चित्र → प्रमुख चित्रो मे यात्रा का अन्त, गांधी जी दांडी यात्रा, स्वतंत्रता का स्वप्न प्रमुख।

BSEB-165/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(1) भारत माता का चित्र → भारत माता का चित्र अवनीन्द्रनाथ ठाकुर ने बनाया था। जो स्वतंत्रता आंदोलन मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। जिसमे एक स्त्री को जोगिया वस्त्र पहना हुआ दर्शाया गया था जो एक स्वतंत्रता मे महत्वपूर्ण भूमिका थी। तथा लोगो को जाग्रत किया।

(2) गांधी जी की दाण्डी यात्रा → गांधी की दाण्डी यात्रा नन्दलाल बसु ने बनाया था।